eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 08, August 2025

तृतीय लिंग की सामाजिक स्थिति एवं वास्तविकता

डॉ. सौरभ सिंह[1]
[1]सहायक प्राध्यापक शिक्षा विभाग, लाला महादेव प्रसाद वर्मा बालिका महाविद्यालय, लखनऊ

Received: 20 August 2025 Accepted & Reviewed: 25 August 2025, Published: 31 August 2025

Abstract

प्राचीन काल से ही भारतीय सामाजिक व्यवस्था लिंगाधारित तथा पुरुषवादी रही है अतः जिस समाज मे पौरूषता को ही आदर्श माना जाता हो, उस समाज में पुरुष लिंग के अतिरिक्त तमाम लैंगिक पहचानें पौरुषहीनता के साथ जोड़ कर देखी जाती है। इसी वैचारिक सोच ने समाज में भेदभाव तथा शोषण को जन्म दिया है। समाज का एक विशाल वर्ग स्त्री तथा किन्नर समाज इसका भुक्तभोगी रहा है। इन उपेक्षित वर्गों की भीड़ में यदि कोई वर्ग सर्वाधिक तिरस्कृत व मुख्य धारा से कटा हुआ है तो वह किन्नर समुदाय है। चूँकि तृतीय लिंग की यौनिकता व लैंगिक पहचान सामान्य स्त्री पुरुष से पृथक होती है। अतः उन्हे भारतीय समाज में एक वर्जित विषय के रूप में देखा जाता है। फलस्वरूप वह समाज की मुख्य धारा से पृथक हाशिये पर तिरस्कृत जीवन जीने को बाध्य होते है। भारतीय समाज में तृतीय लिंग हेतु हिजड़ा शब्द का प्रयोग किया जाता है, जिसका आशय है अपना समुदाय छोड़ा हुआ। वैज्ञानिक दृष्टिकोण के अनुसार किसी शिशु का तृतीय लिंग में जन्म लेने का कारण पूर्णतः जैविक होता है जोकि गर्भधारण या गर्भावस्था के समय किन्ही ग्रन्थिस्राव (हार्मोन) असंतुलन या लैंगिक गुणसूत्रों के असमायोजन का परिणाम होता है। किन्नर होना मात्र एक प्राकृतिक शारीरिक दोष है इसका व्यक्ति की मानसिक स्थिति, कार्यक्षमता तथा जीवन शैली से कोई संबंध नही है।

संकेत शब्द : – तृतीय लिंग लैंगिक पहचान, सामाजिक स्थिति।

Introduction

प्रत्येक समाज की एक परम्परागत संस्कृति होती है जिसका निर्माण हजारो वर्षों में विभिन्न धर्मो, जातियो, नस्लो व समुदाय के व्यक्तियो की परस्पर सामाजिक अन्तः क्रियाओ के फलस्वरूप शनैः शनैः हुआ है। यह संस्कृति ही खाने–पीने, बोलने, अतिथि सत्कार करने विवाह करने आदि जीवन के समस्त पक्षो के विषय में एक विशेष प्रकार के मूल्य व्यवहार के प्रतिमान या आदर्श का निर्माण करती है। इस संबंध में यदि भारतीय संस्कृति पर दृष्टिपात करें तो संसार को वेदान्त के ज्ञान का प्रकाश प्रदान करने वाला भारतीय समाज व उसकी संस्कृति समृद्धि तथा गौरव की एक सीमा पर पहुँचने के पश्चात् अन्याय व भेदभाव के अंधकार में डुबने लगी क्योंकि समाज की आधारभूत इकाइयों अपने कर्तव्यों का निर्वाह करने के स्थान पर अपनी स्थिति को मजबूत करने, अपने अधिकार व सुविधाओ को बढ़ाने तथा उन्हे सुरक्षित रखने के प्रयास में लग गयी। इसी वैचारिक सोच ने समाज में भेदभाव, शोषण व अन्याय को जन्म दिया (सिंह, 2006) 1 समय के साथ भारतीय समाज का एक विशाल समुदाय उपलब्ध अधिकारों व संसाधनों से न केवल वंचित रहा है, अपितु शोषण का शिकार भी रहा है। जिसमें महिलाएं, दलित, अनुसूचित जनजातियाँ तथा किन्नर समुदाय प्रमुखता से आते हैं। इन उपेक्षित वर्गों की भीड़ में यदि कोई वर्ग सर्वाधिक तिरस्कृत व मुख्य धारा से कटा हुआ है तो वह किन्नर समुदाय ही है।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 08, August 2025

तीव्र गति से होने वाले सामाजिक परिवर्तन, बढ़ते शैक्षिक स्तर, आधुनिकता व सरकार द्वारा बनायी गयी योजनाओ के माध्यम से महिलाएं, दलित व अनुसूचित जातियाँ तथा जनजातियाँ विकास की मुख्यधारा से जुड़ रहे हैं तथा मुख्य समाज के साथ कदम से कदम मिलाकर चलने में सक्षम हो सके है। इसके विपरीत लिंग आधारित पुरुषवादी सामाजिक व्यवस्था में किन्नर समुदाय आज भी अधिकार विहीन होकर पशुवत् जीवन जीने को बाध्य है। जिसका प्रमुख कारण हमारे समाज ने लैंगिक विभाजन को दो पारम्परिक खांचो में बॉट दिया हैय स्त्री तथा पुरुष। इन दो लिंगो से इतर लैंगिक पहचान तथा व्यवहार रखने वाले लोगो को हम सहज भाव से स्वीकार ही नही कर पाते हैं। विडम्बना यह है कि जिस समाज में पौरूषता को ही आदर्श माना जाता है, उस समाज में पुरुष लिंग से इतर तमाम लैंगिक पहचान पौरुषहीनता के साथ जोड़ कर देखी जाती है। पौरूषता का अभाव स्वयं में गाली बन जाता है तथा वह व्यक्ति समाज हेतु कलंक का विषय माना जाता है (मीणा, 2018)। यही संकुचित मानसिकता ही किन्नर समुदाय को समाज की मुख्य धारा से जुड़ने के मार्ग में सबसे बड़ी बाधा है, जिसके परिणामस्वरूप सम्पूर्ण किन्नर समुदाय हशिये पर जीवन जीने को बाध्य है।

तृतीय लिंग से आशय :– तृतीय लिंग से आशय है, सामान्य लिंग से पृथक लिंग निर्धारण के दृष्टिकोण से तृतीय लिंग असमायोजित व पृथक होते है जिसके कारण ही उन्हें स्त्री पुरूष से पृथक एक स्वतंत्र श्रेणी में सम्मिलित किया जाता है वास्तव में तृतीय लिंग एक आवरण शब्द है जो उन समस्त व्यक्तियों को अभिव्यक्ति करता है जो सामान्य स्त्री–पुरूष से भिन्न होते हैं, यह न पूर्णतः स्त्री होते है न पुरुष। अधिकांश किन्नर स्वयं के अस्तित्व को स्वीकारते हुए कहते है कि, हम हिजड़ा एक औरत के समान है तथा हमारी भावनाएं व व्यवहार का तरीका वैसा ही है। (नन्दा, 1999)। किसी बच्चे का किन्नर होना मात्र जैविक कारणो पर ही निर्भर नही होता है वरन् यह मनोवैज्ञानिक भी है अर्थात् यह एक ऐसी मनोवैज्ञानिक इच्छा होती है जो एक पुरूष को स्त्री के रूप में जीने के लिए प्रेरित करती है तथा उसी में उसे सुख व संतुष्टि की प्राप्ति होती है (नन्दा, 1999)।

भारतीय समाज में तृतीय लिंग की अवधारणा :– भारतीय समाज में तृतीय लिंग हेतु हिजड़ा शब्द का प्रयोग किया जाता है। हिजड़ा मूल रूप से उर्दू शब्द है जोकि हिजर इस अरेबिक शब्द से आया है। हिजर से आशय है अपना समुदाय छोडा हुआ, उस समुदाय से बाहर निकाला हुआ। अर्थात् स्त्री–पुरुष के सदैव के समाज से बाहर निकलकर स्वतंत्र समाज बनाकर रहने वाला (राय, 2015)। भारत की विभिन्न भाषाओं में किन्नर के लिए भिन्न–भिन्न शब्द व्यवहृत हैं, जैसे– तेलुगू में नपुंसकुडु, कोज्जा या मादा, तमिल में थिरू, नगई, अरावनी, गुजराती में पवैग्या, पंजाबी में खूसरा, कन्नड़ में जोगप्पा। इसी प्रकार भारत के विभिन्न क्षेत्रों में छक्का, खोजा, हिजड़ा, नपुंसक, पंजाबी में खुसरा, कन्नड़ में जोगप्पा। इसी प्रकार भारत के विभिन्न क्षेत्रों में छक्का, खोजा, हिजड़ा, नपुंसक, थर्ड जेण्डर, ट्रांसजेण्डर इत्यादि शब्द भी किन्नरो के लिये प्रयोग किए जाते हैं (गौतम, 2018)।

देश के प्राचीन साहित्य में किन्नरो को तृतीय प्रकृति अथवा नपुंसक मानव के रुप में संबोधित किया गया है। इसी क्रम में संस्कृत के विभिन्न प्राचीन ग्रंन्थो में लिंग के ज्ञान पर भी प्रकाश डाला गया है। प्राचीन भाषाविद् पाणिनि कृत अष्टाध्यायी के खिलभाग में लिंगानुशासन प्राप्त होता है। जिसमें स्त्री, पुरूष एवं किन्नर अथवा नपुंसक के भेद को स्पष्ट किया गया है–

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 08, August 2025

स्तनकेशवती स्त्री स्याल्लोमशः पुरुषः स्मृतः। उभयोरन्तरं यच्च तद्भावे नपुंसकम् ।।

अर्थात् – स्तन, केश वाली स्त्री तथा रोएं वाला पुरुष कहा जाता है। जिसमे इन दोनो का अभाव हो वह नपुंसक अर्थात हिजड़ा कहलाता है (गौतम 2018)। भारत के लगभग समस्त प्राचीन ग्रन्थो में तृतीय लिंग का वर्णन मिलता है। प्राचीन काल में भारतीय समाज में किन्नरों के सामाजिक स्वीकार्यता प्राप्त थी, उन्हे समाज का ही एक अंग समझा जाता था। रामायण, महाभारत, पुराणो, महर्षि वात्स्यायन का ग्रन्थ कामसूत्र, महर्षि पणिनि की अष्टाध्यायी इसी प्रकार के अनेक प्राचीन संस्कृत साहित्यों में तृतीय लिंग का विशद् वर्णन मिलता है।

मुगल काल में भी किन्नरो को सामाजिक स्वीकार्यता प्राप्त थी। मुगलो नें किन्नरो को अपने शासन एवं महल में विभिन्न दायित्व सौपे थे। अकबर ने किन्नरो को महिलाओ के हरम की रक्षा का दायित्व सौपा था। मुगलकाल में किन्नर सेना में भी उच्च पदो पर आसीन थे (हबीब, 1963)। मुगलकाल के पतन के पश्चात– अंग्रेजी शासन काल में तृतीय लिंग की स्थिति अत्यंत सोचनीय हो गयी। अंग्रेजो द्वारा 1871 के ट्राइब्स एक्ट के अनुसार उन्हे अपराधिक जनजाति घोषित कर दिया गया। जिसका प्रभाव यह हुआ कि समय गुजरने के साथ उन्हे अपराधी की श्रेणी में ही रखा जाने लगा (सिंह, 2020)। स्वतंत्रता के पश्चात् भी किन्नरो की स्थिति में कोई भी सकारात्मक बदलाव नही आया। वह आज भी तिरस्कृत तथा भेदभाव से ग्रस्त होकर हाशिये पर जीवन जीने को बाध्य है।

वर्तमान भौतिकतावादी सोच तथा वैज्ञानिक प्रगति के पश्चात भी तृतीय लिंग के प्रति समाज में अनेको पूर्वाग्रह तथा भ्रान्तियाँ हैं जब कि विज्ञान के अनुसार किसी शिशु का तृतीय लिंग में जन्म लेने का कारण मात्र जैविक होता है, इनका जन्म गुणसूत्र तथा ग्रन्थिस्राव (हार्मोन) के असंतुलन का परिणाम होता है यह किसी अभिशाप का परिणाम नही होता है।

तृतीय लिंग में जन्म लेने के वैज्ञानिक कारण :– तृतीय लिंग के रूप में किसी शिशु का जन्म लेना पूर्णतः जैवकीय कारणों पर आधारित होता है इसका प्रमुख कारण है गभर्भावस्था में माँ के गर्भ में किसी कारणवश उत्पन्न हुआ ग्रन्थिस्राव (हार्मोन) असंतुलन । सामान्य परिस्थितियों में यदि गर्भ में भ्रूण लड़का है तो माँ के गर्भ में एड्रोजन हार्मोन की बड़ी मात्रा होती है। एड्रोजन एक ऐसा हार्मोन है जो पुरुष लिंग के निर्धारण तथा पुरुषत्ववादी गुणो के विकास एवं नियंत्रण हेतु उत्तरदायी होता है। यदि गर्भ में कन्या भ्रूण है तो माँ के शरीर में एस्ट्रोजन व प्रोजेस्टरॉन हार्मोन तैयार होते है, प्रोजेस्टरॉन एक स्टरॉयड हॉर्मोन है जो भोजन में लिए गये कोलेस्ट्रॉल से बनता है, यह हार्मोन मात्र स्त्रियों में पाया जाता है। यही दोनो हार्मोन भ्रूण में स्त्रीत्व के विकास हेतु उत्तरदायी होते है। इस प्रकार से ग्रन्थिस्राव (हार्मोन) की संतुलित उपस्थिति भ्रूण को लड़का तथा लड़की के रूप में विकसित करते है (गास्डन, 1994)।

ऊपर वर्णित दोनों अवस्थाएं एक सामान्य प्रक्रिया की घोतक है परन्तु कुछ अपवाद परिस्थितियो में इन सेक्स हार्मोन टेस्टॉस्टरॉन तथा प्रोजेस्ट्रॉन का संतुलन बिगड़ जाता है, इस अवस्था में या तो हार्मोन आवश्यक्ता से अधिक बनने लगते है, या तो आवश्यकता से कम बनते हैं इस अवस्था को वैज्ञानिक भाषा में "Cogneital adrenal hyperplasia and abnormalities पद the cromosoms" कहते हैं, यही अवस्था किसी भ्रूण के तृतीय लिंगी होने के लिए उत्तरदायी होती है (गॉस्डन, 1994)। इस अवस्था में भ्रूण में न तो

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 08, August 2025

पूर्णतः पुरूषत्व के गुण आ पाते हैं तथा न स्त्रीत्व के अपितु वह दोनो लिंगो का मिला जुला प्रतिरूप दिखायी देता है। इस अवस्था में भरूण के जननांगो का विकास भी पूर्ण रूपेण नही हो पाता है।

इस प्रकार के लैगिंक असमायोजन को विभिन्न अवस्थाओं में विभाजित किया जा सकता है। प्रत्येक अवस्था के शारीरिक लक्षण तथा यौन क्षमताएं भिन्न होती है। इन अवस्थाओ को मुख्य तीन श्रेणियो में विभाजित किया जा सकता है –

1. स्नायुविषयक प्रकार (Neurological Type)
2. मनोवैज्ञानिक प्रकार (Psychological Type)
3. शारीरिक प्रकार (Physical Type)

1. स्नायुविषयक प्रकार :– लिंग विभेद मात्र संरचनात्मक ही नही होता है अपितु यह स्नायुतंत्र के आधार पर भी होता है । इस अवस्था में संरचना के आधार पर मनुष्य पूर्णतः सामान्य स्त्री व पुरूष होते है, परन्तु स्नायु तंत्रिका तंत्र विकृति के कारण उनमे कुछ जन्मजात असमायोजित व्यवहार देखने को मिलता है। इस अवस्था के मुख्य

तीन प्रकार है–

1. उभयलिंगी इस विकार से ग्रसित व्यक्ति महिला तथा पुरुष दोनो लिंगो के प्रति समान रूप से आकर्षित होता है।

2. समलिंगी– इस स्नायु विकार से ग्रसित व्यक्ति अपने समान लिंग के प्रति आकर्षित होता है।

3. परलैंगिक इस स्नायु विकार से ग्रसित व्यक्ति को अपने लिंग के विपरीत विषम लिंग को अपनाना व व्यवहार करना पसंद होता है (पाठक, 2019) |

2. मनोवैज्ञानिक प्रकार :– इस प्रकार की यौन अक्षमता मनोवैज्ञानिक होती है। इसका प्रत्यक्ष संबंध शारीरिक अक्षमता से नही होता है यह पूर्णतः मानसिक है। ऐसी अक्षमता का अत्यधिक सीमा तक चिकित्सा के माध्यम से सुधार किया जा सकता है। इस यौन अक्षमता के विभिन्न कारण हो सकते है जैसे निराशा, दवाओ का कुप्रभाव, लज्जा, सामाजिक स्थिति, कोई शारीरिक विकार, अपने से बेहतर जीवन साथी आदि कारणो से पूर्ण रूपेण स्वस्थ स्त्री पुरूष भी यौन संबंधो मे सफलता नही प्राप्त कर पाते हैं।

3. शारीरिक प्रकार :– इस विकार के अर्न्तगत वह व्यक्ति आते है जो विभिन्न शारीरिक कारणो जैसे गुणसूत्रों की असंगतता, रक्त संचार संबंधी समस्या या किसी शल्य चिकित्सा संबंधी समस्या के कारण अपूर्ण होते हैं। तथा यौन संबंध बनाने में असक्षम होते हैं। वास्तव में किन्नर इसी श्रेणी के अर्न्तगत आते है। गुणसूत्र असमायोजन की प्रमुख अवस्थाएं निम्नलिखित होती हैं।

1. टर्नर सिंड्रोम :– यह मुख्यतः स्त्रियों में पाया जाने वाला विकार है, इसमे होने वाला शिशु जो कि एक कन्या होती है उसका जन्म मात्र एक (X) गुणसूत्र के साथ होता है। इस विकार में बाहर की जननेन्द्रियों का विकास स्त्री जैसा ही होता है परन्तु उसमे अण्डकोश तथा गर्भाशय नही होता है। वह होती तो स्त्री है परन्तु उसको बच्चा नही हो सकता है।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 08, August 2025

2. ऐड्रोजन असंवेदनशीलता सिड्रोम (AIS) :– एंड्रोजन असंवेदनशीलता सिन्ड्रोम एक यौन संबंधी विकार है जिसमें नर भरूण (XY) अपने मुख्य रूप से पुरुष सेक्स हार्मोन (एंड्रोजन) को प्रतिक्रिया देने में पूरी तरह से अक्षम हो जाता है। यह उस जीन में बदलाव के कारण होता है, जो कोशिकाओ के अंदर प्रोटीन बनाने का काम करती है।

इस असमायोजन के कारण गर्भ पुरूष का होता है परन्तु उसमे ग्रन्थिरस (हार्मोन) असमायोजन के कारण पुरुष जननेन्द्रियों का विकास नही हो पाता है, वीर्य में शुक्राणुओ का अभाव होता है तथा कुछ पुरुषो मे स्तनो का विकास भी हो जाता है।

3. संज्ञानात्मक अधिवृक्क हाइपरप्लासिया (CAH) :– इस प्रकार के विकार में गर्भावस्था में पुरुष ग्रन्थिरस (हार्मोन) एन्ड्रोजन का स्तर अत्यधिक बढ़ जाता है यदि गर्भ लड़के का हो तो विशेष प्रभाव नही पड़ता है परन्तु यदि गर्भ लड़की का हो तो जन्मी हुयी लड़की श्टॉमब्वायश पद्धति की होती है।

4. गुणसूत्र विकृति :– गुणसूत्र विकृति का प्रमुख कारण क्लाइनफेलटर सिन्ड्रोम होता है। इस अवस्था को (XXY) भी कहा जाता है। यह मुख्यतः पुरूषों में पाया जाने वाला विकार है, जिसमें नर भ्रूण एक अतिरिक्त गुणसूत्र के साथ जन्म लेता है, जिसके कारण उसके वीर्य में शुक्राणुओ का अभाव पाया जाता है तथा यौन संबंध स्थापित करने में अक्षम होते कुछ अन्य अवस्थाओं में पुरूष भ्रूण में अतिरिक्त (Y) गुणसूत्र (XYY) पाया जाता है तथा मादा भरूण में अतिरिक्त (X) अर्थात (XXX) भी देखा जाता है जो विभिन्न प्रकार की यौनिक विकृतियो का कारण बनता है।

5. लघु यौन विसंगतिया :– यह एक ग्रन्थिरस (हार्मोन) विकार है जिसके कारण जन्म लेने वाले शिशु के जननांग सामान्य स्त्री व पुरूष से भिन्न प्रकार के होते हैं जिसके कारण वह संतानोत्पत्ति व यौन क्षमता से रहित होते हैं (कॉर्लसन, 2013)।

इन अवस्थाओ के अतिरिक्त एक अन्य अवस्था भी है जिसमें गर्भावस्था में पुरूष हार्मोन टेस्टास्टारॉन कम मात्रा में तैयार होता है। जिसके फलस्वरूप यदि गर्भ लड़के का हो तो जननेन्द्रियाँ पुरुषों की होने के बावजूद उस बालक की सोच तथा भावना स्त्रियों के अनुरूप होती है। उसे स्त्रियो जैसा रहना, व्यवहार करना प्रिय होता है। तथा किशोरावस्था में आने के पश्चात् यह लड़के पुरूषो की ओर आकर्षित होते हैं (राय, 2015)।

निष्कर्ष :– स्पष्ट है कि तृतीय लिंग में जन्म लेने वाले सदस्य किसी अभिशाप आश्चर्य या उपहास का विषय नही है, वरन– किन्नर होना मात्र एक प्राकृतिक दोष है जो उन्हे गर्भावस्था के समय ही विभिन्न जैविक कारणो के चलते मिल जाता है। उनकी मात्र यौनिकता भिन्न होती है तथापि वह भी हमारे समान एक सामान्य इंसान होते है। उन्हे भी मुख्य समाज में रहने तथा अपनी मौलिक आवश्यक्ताओ जैसे– शिक्षा, स्वास्थ्य, स्नेह, सम्मान को प्राप्त करने का पूर्ण अधिकार है। अतः वर्तमान समय में समाज की किन्नरो को प्रति संकीर्ण सोच तथा भ्रान्तियो को बदलने की अत्यधिक आवश्यक्ता है ताकि उन्हे सामान्य मानव की छवि के साथ मुख्य धारा में जोड़ने का वातावरण बनाया जा सके।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 08, August 2025

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :–

1. पाठक, विनय कुमार (2019), किन्नर विमर्श, दशा और दिशा, नई दिल्लीः भावना प्रकाशन (पृष्ठ सं0–23) गौतम, कपिल कुमार (2018), भारतीय समाज में थर्ड जेण्डर की अवधारणा एवं वर्गीकरण, अर्न्तगत डा० एम फिरोज खान (संपादक), थर्डजेण्डर और साहित्य, कानपुर, विकास प्रकाशन (पृष्ठ० सं–9,10)
2. मीणा, प्रमोद (2018), हाशिये से आती चीखें और गुलाममंडी, अर्न्तगत डा०एम फिरोज खान (संपादक), थर्डजेण्डरय अतीत और वर्तमान, कानपुर, विकास प्रकाशन (पृष्ठ सं0–41)
3. त्रिपाठी, लक्ष्मीनारायण (2015), मै हिजड़ा मैं लक्ष्मी, (डा० शशिकला राय एवं सुरेखा बनकर द्वारा अनुवादित), नयी दिल्लीय वाणी प्रकाशन (पृष्ठ सं 159)
4. सिहं, डा. रामगोपाल (2006 द्वितीय संस्करण), सामाजिक न्याय एवं दलित संघर्ष, जयपुर राजस्थानय हिन्दी ग्रन्थ एकादमी (पृष्ठ 9)
5. सिंह, डा० विजेन्द्र प्रताप (2020), थर्ड जेण्डर मध्यकालीन इतिहास से वर्तमान तक अर्न्तगत डा० विजेन्द्र प्रताप सिंह एवं डा० रवि कु० गोड़ (संपादक) थर्ड जेण्डर आस्मिता और संघर्ष, कानपुर, विकास प्रकाशन